International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 6.959 Volume 9, Issue 12, December 2022
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

'तुम जिंदगी का नमक हो' : लघुकथा संग्रह में स्मृति, प्रेम और जीवन संघर्ष के विविध आयाम

डॉ० मोनू सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी,
चौ० चरण सिंह राजकीय महाविद्यालय,
छपरौली, बागपत

आज के जीवन में जितनी त्वरा है इतनी पहले कभी नहीं थी। तेज रफ्तार से दौड़ती इस जिंदगी में इतना समय किसी के पास नहीं, जो वृहदाकार उपन्यास और प्रबंध काव्य पढ़ सके। फास्ट–फूड (तुरंताहार) और रेडिमेड के इस युग में पाठक साहित्य को भी बहुत कम समय में पढ़कर आनन्द लेना चाहता है। ऐसी पीढ़ी के लिए लघुकथा एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती है, जो कम समय में भी गहन अनुभूतियों में डूबते–उतरते आनन्द ले सके। आज का युवा कई मोर्चों और मुहानों पर जिंदगी को कई अलग अलग खानों में जीने का अभ्यस्त हो चला है। ऐसे संक्रांति बिन्दु पर खड़े युवाओं की संवेदनाओं, मानसिक ऊहापोह, द्वन्द्वों, स्वप्नों और उनकी अनुभूतियों को बहुत ही प्रामाणिक और संजीदा अभिव्यक्ति विपिन शर्मा की नवीनतम पुस्तक **'तुम जिंदगी का नमक हो'** में देखने को मिलती है। यह किताब पुस्तकनामा प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। इस पुस्तक की भूमिका में लेखक ने इन्हें **'लघु कहानियाँ या रचनात्मक गद्य'** कहा है। कहानियाँ या गद्य एक दूसरे से भिन्न नहीं होती वरन् एक दूसरे की पूरक ही होती हैं। अच्छी कहानियाँ रचनात्मक गद्य की ही माँग करती हैं। इन कहानियों का गद्य ठस गद्य नहीं है, न ही विचार के बोझ से आक्रांत गद्य है। यह तो मुस्कराता हुआ, बतियाता हुआ मखमली गद्य है, जो इन कहानियों को एक नई भव्यता और गरिमा प्रदान करता है। इस लघुकथा की कथाओं का विश्लेषण करने से पूर्व हमें लघुकथा की कुछ परिभाषाओं पर भी विचार करना आवश्यक है।

डॉ० रूपदेव गुणदेव 'लघुकथा' के बारे में लिखते हैं– **''लघु से यहाँ अभिप्राय यह है कि घटना या विचार या अनुभव का वर्णन भी कम से कम शब्दों में किया जाए।''**[1]

डॉ० सतीशराज पुष्करणा का लघुकथा के सन्दर्भ में विचार है– **''लघु होना इसकी कमजोरी नहीं इसका एक गुण है।''**[2]

डॉ० सतीश दुबे का इस सन्दर्भ में मानना है– **''मानव मन के बीच घटने वाली क्षणिक घटनाओं में जीवन की विराट व्याख्या छिपी रहती है आर इस विराट व्याख्या को संक्षिप्त में कह देना 'लघुकथा' है। संक्षिप्त होना इसकी प्रमुख विशेषता है।''**[3]

इस कहानी संग्रह में 111 कहानियां संकलित हैं, कुछ कहानियां आकार में बेहद लघु हैं, जबकि कुछ का कलेवर आधे पृष्ठ या पूरे पृष्ठ तक फैला है। लघु कथाएं पाठक से ज्यादा सजगता और संवेदनशीलता की मांग करती हैं। इन्हें शीघ्रता से नहीं पढ़ा जा सकता। इन्हें उपन्यास की तरह भी नहीं पढ़ा जा सकता वरन् ये पढ़ने के लिए गहरे एकांत और सुकून की मांग करती हैं। छोटे छोटे वाक्यों में कई– कई भाव , एहसास और संवेदनाएं अंतर्गथित हैं।

इन कहानियों का स्वर वैविध्य लिए हुए है, हालांकि सर्वाधिक कहानियां प्रेम के महीन धागों से रची–बुनी गईं हैं, इसलिए पहले बात प्रेम कहानियों पर ही केंद्रित करते हैं। इस भौतिक जगत में प्रेम ईश्वर का सबसे सुंदर उपहार है। प्रेम दुनिया की सभी भाषाओं का सबसे सघन, सबसे गहन, सबसे प्रांजल, सबसे पवित्र और सबसे मखमली शब्द है। प्रेम ही इन लघु कथाओं का उत्स भी है और विस्तार भी।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

इन कहानियों में प्रेम के छोटे–छोटे किंतु बेहद सघन एहसास मुखरित हुए हैं। सृष्टि के प्रारंभ में यदि कुछ रहा होगा तो वह प्रेम ही था और सृष्टि के अंत में भी यदि कुछ शेष रहेगा तो वह प्रेम ही होगा। प्रेम आदि और अनन्त है। दुनिया की तमाम भाषाओं के साहित्य पर यदि नजर डालें तो सर्वाधिक प्रेम ही रचा और बुना गया, प्रेम ही जिया गया। इन लघु कथाओं में लेखक ने प्रेम को कई कोणों से संवेदनात्मक रूप से जीने का ईमानदार प्रयास किया है। यह प्रेम मध्ययुगीन प्रेम नहीं है, न ही बैठे–ठाले का प्रेम है। यह तो वर्तमान समय के तमाम दबावों, तनावों, विसंगतियों, विद्रूपताओं, अन्तर्विरोधों के मध्य जीवित रहने वाला प्रेम है। उदारीकरण, बाजारवाद, बहुराष्ट्रीय निगमों के दबावों के मध्य उत्पन्न प्रेम है। इन कहानियों में प्रेम के इसी रूप का विस्तार है। डॉ० विपिन शर्मा की कहानियाँ अपने कलेवर में सतसईया के दोहरे अर्थ की भाँति गम्भीरता लिए हुए हैं। इन कहानियों में जीवन का कटु यथार्थ सामने आता है। ये कहानियाँ पाठकों को चौंकाती नहीं है अपितु उनके अन्दर परिवर्तन की एक बेचैनी को जन्म देती हैं। डॉ० विष्णु प्रभाकर ने लघु कहानियों की इन्हीं विशेषताओं पर टिप्पणी करते हुए उचित ही लिखा है– **''लघुकथा अपने आप में एक स्वतन्त्र, सशक्त विधा है। 'सतसैय्या के दोहरे . . . 'देखन में छोटे लगे घाव करे गम्भीर' वाली बात ही नहीं है, इसकी शक्ति के पीछे सामाजिक परिवर्तन की पूरी प्रक्रिया है। वह अन्य विधाओं की तरह जीवन के यथार्थ को अंकित करती है और जीवन की आलोचना भी करती है। लघुकथा की विशेषता 'चौंकाना' नहीं है न मात्र स्तब्ध करना है, वह तो सूत्र रूप में विराट जीवन की व्याख्या करती है। उसकी अपनी भाषा होती है, न भावुकता, न ऊहापोह, न आसक्ति, पर अर्थवहन की क्षमता में अपूर्व।''**[4]

इन प्रेम कहानियों में लेखक आपकी उंगली पकड़कर आपको जीवन के सबसे स्वर्णिम दौर में ले जाता है, जब आप किसी के प्रेम में थे, जब समूची दुनिया प्रेममय नजर आती थी और जब यह प्रेम किसी कारण जीवन में फलीभूत न हो सका, तब यही प्रेम हमेशा के लिए एक टीस बनकर रह जाता है। इन कहानियों में प्रेम में अकेले पड़ जाने की पीड़ा का मार्मिक आख्यान रचा गया है किंतु यह प्रेम पलायन नहीं सिखाता, न ही इसकी परिणति दैन्य रूप में होती है, न ही यह आत्मनिर्वासन रचता है अपितु जिंदगी की एक खट्टी–मीठी–सी चुभन बनकर आता है। इस प्रेम में जीवन का नकार नहीं है, स्वीकार है। **'क्योंकि मेरा मन तुमसे भरा है'** कहानी का एक अंश देखिए–

> ***''प्रेम ही एक ऐसी चीज है, जो वक्त के साथ धूमिल होने के बजाय और गहरा हो जाता है और याद रखना मैं और मेरी यादें भी समय के साथ धीमीं नहीं होंगी। मैं तुम्हारे साथ रहूं या न रहूं, मगर मेरी यादें तुम्हारे साथ रहेंगी। बारिश में पहाड़ से उठने वाली घटाओं की तरह, जो आसमान और पेड़ों को धुआँ–धुआं कर देती हैं। झमाझम बरसती हैं और नीला आसमान चमक उठता है।'***[5]

पहाड़ पर दीर्घ प्रवास के कारण पहाड़ लेखक की चेतना में विन्यस्त है। इन कहानियों में पहाड़ का रोमान भी है और पहाड़ का दर्द भी। इन कहानियों को पढ़ते हुए लगता है जैसे आप प्रेम में टूटे हुए किसी व्यक्ति की डायरी पढ़ रहे हों। प्रेम में अकेले होने की गहरी टीस इन कहानियों के पार्श्व में हैं, जैसे कोई तफसील से अपनी व्यतीत जिंदगी के लम्हों को याद कर रहा हो। लेखक ने भूमिका में ही बिना किसी संकोच के इस बात को स्पष्ट कर दिया है–

> ***''इन कहानियों के पीछे की, जो दुनिया है, वह हमारी अपनी दुनिया है। प्रेम की तलाश में गहरे अकेलेपन को भोगते हुए लोगों की दुनिया। प्रेम की बेसब्री में जीते हुए लोगों के खाली बर्तन से टनटनाते हुए, अकेलेपन के गहरे स्कैच, एक ऐसा क्राफ्ट, जो है भी और नहीं भी।'***[6]

ये कहानियां आपको अमृतसर की गलियों से होती हुई लाहौर, कश्मीर और चेकोस्लोवाकिया तक ले जाती हैं। प्रेम को कोई सरहद भला कब रोक पाई है। प्रेम के लिए सरहदें हमेशा बेमानी रहीं हैं। लेखक की सांझी संस्कृति में गहन आस्था है इसलिए अमृतसर का जिक्र करते हुए कब आप लाहौर पहुंच जाएंगे आपको पता भी नहीं चलेगा। इन कहानियों को पढ़ते हुए चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी का अमृतसर याद आता है। कृष्णा सोबती का लाहौर याद आता है। असगर वजाहत का नाटक 'जिन लाहौर नहीं देख्या वो जम्हाई नहीं' के अक्स बार–बार मस्तिष्क में उभरते हैं।

ये कहानियां अपनी परंपराओं से, अपनी विरासत से, अपनी सामासिक संस्कृति से भी गहन रूप से जुड़ी हैं, भले ही कहानियों में उनके छोटे–छोटे संकेत और अत्यल्प ब्यौरे आते हों किंतु ये बड़े ही

विश्वसनीय और प्रामाणिक लगते हैं। संग्रह की दूसरी ही कहानी में अमृतसर का बड़ा ही आत्मीय चित्र आता है–

''बात किसी की भी हो, बात के सिरे तुमसे जुड़ जाते हैं। तुम्हें याद हो या ना हो, अमृतसर की गलियों में घूमते हुए, तुम्हें सबसे ज्यादा किस चीज की चाह होती। आज भी मैं अच्छे से जानती हूँ, शिव कुमार बटालवी। उस जादुई शायर की तलाश में तुमने किताबों की सारी दुकान खोज मारी थीं।''[7]

इन कहानियों में विभाजन का दर्द भी है। आजादी के सात दशक व्यतीत होने पर लेखक को प्रेम में भी विभाजन की विभीषिका नहीं बिसुरती। अंग्रेजों द्वारा विभाजन का दिया गया सबसे गहरा जख्म सालता रहता है। **'है अभी भी वह आधा पाकिस्तानी'** कहानी सांझा विरासत और विभाजन के बाद फैलते नफरती सैलाब को बहुत ईमानदारी से दर्ज करती है–

''वह अटारी बॉर्डर पर था, उसके साथ लोगों का एक हुजूम था। पासिंग आउट परेड के बाद लोग अपनी मंजिलों की तरफ बढ़ने लगे। वह काफी समय तक उन सीढ़ियों पर बैठा रहा। सोचते हुए, गर सरहद ना होती तो वह लाहौर की गाड़ी पकड़कर शाम को लाहौर के किसी कहवा घर में दो घूंट लगा आता। लाहौर उसकी जुबान पर इतना ही आता, जितना अमृतसर। उसकी जड़ें लाहौर में थीं पार्टीशन से पहले। उसे अपना घर याद आता, शहर की गलियां भी। उसके दादा ने जो लाहौर के किस्से उसे सुनाए थे ,वह दोस्तों को बताने लगा, इतने में किसी ने कहा, इसे छोड़ क्यों नहीं देते, उस तरफ। उस तरफ, इस तरफ का लफ्ज़ बड़ा खतरनाक था। वह सोच ही रहा था, लोगों की हंसी और उड़ते से शब्दों की आहट आधा पाकिस्तानी यह शब्द शीशे सा उसके मन में चुभ गया। वह सोचता सीरिल जॉन रेडक्लिफ की खींचीं एक लकीर ने हमेशा के लिए भूगोल ही नहीं बदला बल्कि लोगों का जीवन भी बदल दिया। उसकी तीन पीढ़ियां पुरानी दिल्ली में रहीं मगर है 'अभी भी वह आधा पाकिस्तानी?''[8]

'मामला इश्क का', 'राजनीति पार्टीशन की' आदि कहानियाँ भी विभाजन के दंश को बयां करती हैं। इन कहानियों में विभाजन की दारूण विभीषिका और साम्प्रदायिक वैमनस्य को बहुत ही महीन तरीके से मार्क किया गया है।'' इन लघुकथाओं में माइक्रोस्कॉपिक दृष्टि निहित है। कहानीकार सूक्ष्म लैंस से समाज के कुलबुलाते हुए यथार्थ को सामने लाने की सार्थक कोशिश करता है। डॉ० कमल चोपड़ा लघुकथा की विशेषताओं को उजागर करते हुए लिखते हैं– **''लघुकथा एक माइक्रोस्कॉपिक फोकस है जो कि अणु की तरह अपरिमित ऊर्जा अपने में समाये रखती है और स्पॉट लाइट की तरह एक स्थिति पर ही रोशनी का एक गोल घेरा छोड़ती है और उसे पूर्णतया जगमगा देती है।''**[9]

लेखक देश दुनिया की राजनीति से भी ग़ाफ़िल नहीं है। उसकी मनोरचना में कश्मीर का दर्द भी है और अफगानिस्तान पर रूस और अमेरिकी फौजों को जंग का मैदान बना देने की दुश्चिंताएं भी हैं। **'इस बार वह झेलम के किनारे थे'** कहानी प्रेम के मार्फत कश्मीरी पंडितों के अन्तहीन दर्द से हमें जोड़ देती है। कश्मीरी पंड़ितों के साथ हुई बर्बर ज्यादतियों को कोई भी संवेदनशील लेखक कैसे विस्मृत कर सकता है। अपने घर से बेघर होने की पीड़ा का दंश इस कहानी में बखूबी अभिव्यक्त हुआ है।

''श्रीनगर शांत होते हुए भी पल भर में उबल सकता था, ठंड बेहद थी। आक्ताावियों पाज की कविताओं की एक किताब वह हमेशा अपने साथ रखता। उसे पहले ही कितनी धमकियां मिल चुकी थीं। कश्मीरी पंडितों पर रिपोर्टिंग ना करें। वह तो उसके बचपन का प्यार था ,जो उसे यहां खींच लाया था।''[10]

'अंकल सैम तुम्हारी कार गुजारियां', 'रुदालियों का समूह गान वाया अफगानिस्तान', 'जैसे ही वह काबुल में घुसे वह बंदर बन गए', 'उजड़े हुए लोग', 'इश्क नहीं अक्सर घर तलाशते हैं' आदि कहानियों में अफगानिस्तान की करूण त्रासदी अभिव्यक्त हुई है।

लेखक अफगानिस्तान के कड़वे सच को बिना किसी उलझाव के दो टूक कह देता है। अफगानिस्तान कैसे रूसी और अमेरिकी फौजों के हाथ की कठपुतली बनकर जहन्नुम बन गया। इन कहानियों में यह कड़वा सच बिना किसी पूर्वाग्रह और अतिरंजना के उजागर हुआ है–

''सी.एन.एन., बी.बी.सी. पर अफगानिस्तान की बदरंग तस्वीरें लगतार शेयर की जा रहीं थीं। मगर कोई रूस और अमेरिका पर बोलने को राजी नहीं था, जिन्होंने काबुलीवाला के हाथों में बंदूक थमा दी थी। मदरसों में धर्म की अफीम पिलाने के शुरुआती दौर में लाल सितारा वालों और दुनिया में कहीं भी सभ्यता के झंडाबरदारों की मिली भगत से रूआब बजाने वाले हाथों में ए.के.–47 थमाकर कह दिया– तुम्हारी जन्नत इसी के ट्रैगर से निकलेगी अब वही लोग टोटल स्यापा कर रहे हैं, जैसे ही ट्वीटर पर उसने यह टिप्पणी लिखी, हंगामा खड़ा हो गया। साहब आप अमेरिका को कहें तो ठीक है, रूस तो हमारा ख्याल है।''[11]

नौंवा दशक समूची दुनिया में हलचल का दशक था, एक ओर उदारीकृत व्यवस्था ने व्यापार के लिए अपने बंद कपाट एक–दूसरे के लिए खोल दिए। पूँजी के अबधित प्रसार ने एक नई संस्कृति को जन्म दिया, पूरी दुनिया एक गाँव में तब्दील हो गई। बाजार के लिए प्रत्येक विचारधारा, धर्म, संबंध एक उत्पाद में तब्दील हो गई। बाजार का सर्वग्रासी रूप दनदनाता हुआ हमारे जीवन में घुसता चला गया। खाओ, पीओ ऐश करो मित्रो का मुहावरा फिंजाओं में तारी हो गया। देह को निचोड़कर मजा लेने की संकल्पना अस्तित्व में आई। कर्ज की संस्कृति ने जोर पकड़ा, बैंकों ने लोगों के अन्दर उधार लेने के संकोच पर विजय पाई, **''ऋणम कृत्वा घृतम पिबेत''** की धारणा को बल मिला। इस मुक्त अर्थव्यवस्था को मीडिया, इंटरनेट, सूचना तन्त्र और विज्ञापन जगत् ने नया आकाश दिया, नब्बे के दशक के बाद विश्व स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तन सोवियत संघ का विघटन के रूप में हुआ। वैश्विक स्तर पर यह एक युग का अवसान था, जिसे अमेरिका की विजय के रूप में देखा जा रहा था, इन सभी स्थितियों का गहन एवं सूक्ष्म चित्रण इस संग्रह की कहानियों में देखने को मिलता है। **'कण्डोम, व्हिस्की और आजादी'** का समय नामक कहानी का एक टुकड़ा इस सन्दर्भ में देखने योग्य है–

''रेडियो पर एक खबर आयी थी दिसम्बर 1991 का यह वक्त था। . . . न्यूज की हैडलाईन थी सोवियत संघ का हुआ विघटन। मिखाइल गोर्बाचेव ने यह जानकारी दी। . . . अब दुनिया अमेरिकी रास्ते पर थी, सपना था पूँजीवाद, सम्प्रदायवाद, राजनीति का प्रिय अस्त्र है, जिसे आज भी खाद्य–पानी दिया जा रहा है।''[12]

इस संग्रह की कई कहानियों में ओल्ड एज होम में अपना अंतिम समय व्यतीत करने के लिए विवश लोगों की कारूणिक गाथाएँ भी विन्यस्त हैं। भारत जैसे महान सांस्कृतिक विरासत के देश में सामाजिक स्तर पर बहुत कुछ टूट फूट रहा है। मुक्त पूँजी के प्रसार के इस दौर में संबंधों में आत्मीयता और साहचर्य का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है। एकल परिवार में अकेलेपन की यंत्रणा झेलने के लिए अभिसप्त बुजुर्ग आज के समाज का कड़वा सच है। यह सच बहुत ही संवेदनात्मक रूप में लेखक की रचनात्मकता का हिस्सा बनकर इन कहानियों में ढल गया है।

इन कहानियों से गुजरते हुए अक्सर निर्मल वर्मा याद आते रहते हैं, उनकी भाषा, उनकी कहानियाँ, यात्रा–वृत्तांतों और संस्मरणों में चित्रित सर्द बर्फ, पहाड़, अकेलापन, पीछे छूट गया प्रेम, खामोशी, पहाड़ पर गिरती रिमझिम बारिश और उनका प्राग सब कुछ याद आता रहता है। यह कमजोरी नहीं है वरन् एक लेखक का अपने वरिष्ठ लेखक की परंपरा के साथ जुड़ाव है।

ये कहानियां सिर्फ प्रेम तक सीमित नहीं है वरन् प्रेम इनके केंद्र में है किंतु वर्तमान समय के साथ भी यह निरंतर संवाद करती हैं। जाति, धर्म, सम्प्रदाय, पहाड़, मैदान के खांचों में विभाजित इस दुनिया को भी अपना वर्ण्य विषय बनाती हैं। मानवीय सभ्यता की उत्तरोत्तर नई व्याख्याओं और तमाम वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद दुनिया में आज भी सम्प्रदायवाद, नस्लवाद, क्षेत्रवाद, हिंसा एवं युद्ध जैसी व्याधियों से घिरी है। राजनीति और पूँजी का गठजोड़ आम–जनमानस के जीवन को ओर जटिल बना रहा है। **'पैराडाइज कहीं खो गया'** संग्रह में संकलित एक ऐसी ही मार्मिक कहानी है। अलगाववाद आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती है। यह जहर हमारी नयी पीढ़ियों में फैलता ही जा रहा है। इसके पीछे कौन–सी ताकतें काम कर रही हैं, इसकी शिनाख्त बहुत जरूरी है। कोई भी संवेदनशील रचनाकार इस ओर से आंखें बंद नहीं कर सकता। कहानी का एक टुकड़ा इस संदर्भ में देखें–

''अब सरदार उनके लिए आउट साइडर थे, जिन्होंने उनकी जमीन पर कब्जा जमा लिया था? अब हर जगह इंसान बाहरी था। देसी पहाड़ पर बाहरी थे। पहाड़ी मैदान पर बाहरी थे। गढ़वाल में रहते हुए मलंग राईटर ने महसूस कर लिया था कि

कि एक पी वाले दूसरी पी वालों के लिए बाहरी हैं। हिंदू मुसलमान के लिए बाहरी और मुसलमान हिंदू के लिए। यह हमने कैसा समय रच डाला?''[13]

कहानी का अन्तिम वाक्य **'यह हमने कैसा समय रच डाला'** हमारी चेतना पर हथौड़े की तरह पड़ता है और हमारे आधुनिक एवं सभ्य होने की कलई खोल देता है। यह प्रश्न दूर तक ही नहीं देर तक हमारा पीछा करता है। इस संग्रह की कई कहानियों में कोरोना वायरस की विभीषिका भी चित्रित हुई है। कोरोना वायरस इस सदी की सबसे बड़ी महामारी थी। हमारी पीढ़ी के लिए यह एक अभूतपूर्व संकट था। कोरोना वायरस के कारण न जाने कितने परिवार सदा के लिए उदास हो गए। कोरोना वायरस में एक–एक सांस के लिए तड़पती जिन्दगी का सच इन कहानियों में प्रकट हुआ है। **'उसकी रिपोर्ट निगेटिव थी', 'जब कोरोना 'वुहान में था', 'बस अब साँस नहीं ली जाती'** आदि कहानियों में कोरोना वायरस का मनोवैज्ञानिक भय, कोरोना के दौरान लापरवाही, कुप्रबंधन और आम आदमी की आर्थिक दुश्चिंताओं का प्रामाणिक चित्रण देखने को मिलता है। ये कहानियां हमारे समय के कटु यथार्थ से मुठभेड़ करती हैं। दम तोड़ती इंसानियत इन कहानियों के केंद्र में हैं। भारत जैसे बहुलतावादी देश के लिए ये स्थितियां कितनी विद्रूप हो चली हैं। हजारों वर्षों की सांस्कृतिक विरासत पर संकट के स्याह बादल मंडरा रहे हैं। ये कहानियां इस सांस्कृतिक विरासत को, इंसानियत को, विविधता को, मानवीय मूल्यों को बचाने की बहुत ही संजीदा कोशिश करती हैं। अरूणिमा की लालिमा से भरे इस देश में जहां अनजान क्षितिज भी सहारा पाते रहे हैं, उसी सांस्कृतिक वैभव को छिन्न–भिन्न होते देख लेखक व्यथित हो उठता है।

संग्रह की कई कहानियों में सामाजिक रूप से आए परिवर्तनों की उपस्थिति को भी देखा जा सकता है। इन कहानियों में नये जमाने की लड़कियाँ, स्त्रियाँ और महिलाएँ हैं, जो जिन्दगी को ढोने में नहीं वरन् जीने में विश्वास करती हैं। ये आज के जमाने की बोल्ड स्त्रियाँ हैं, जो अपने जीवन के फैसले स्वयं लेती हैं। ये रूढ़िवादी समाज को धत्ता बताती हुई आत्मनिर्भर स्त्रियाँ हैं। इन कहानियों में समाज की बदलती मान्यताओं और संबंधों की नई निष्पत्तियाँ हैं। **'तुम मेरे टॉम क्रूज हो', 'ओल्ड एज़ होम की तन्हाई'** कहानियाँ इन स्थितियों को बेहतर ढंग से रेखांकित करते हैं।

ये कहानियाँ मानव ही नहीं मानवेत्तर स्तर पर भी अपनी गहन संवेदना के कारण हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। लेखक उजड़ते पहाड़ों और परिंदों के नष्ट होते रैन–बसेरों की पीड़ा पर भी सख्त टिप्पणी करता है। जल, जंगल, जमीन, पहाड़ को लेकर राजनीति तो बहुत होती है, किंतु उसके वास्तविक संरक्षण एवं संवर्धन की कोशिशें कभी क्रियान्वित नहीं होती। कथनी और करनी के इस द्वैत पर तीखा व्यंग्य करता है। 'अब उस परिंदों की आवाज नहीं सुनाई देती' संग्रह की एक लघु कहानी है–

''अप्रैल का महीना आते ही पहाड़ के जंगल धू–धू कर जलने लगते हैं या जला दिए जाते हैं। मगर परिंदों का क्या, जिनका बसेरा अप्रैल आते ही आदमजात उजाड़ देते हैं उनके नेह नाते भी। पहाड़ से उठते धुएँ ने यह बात उसके कानों में कही है। मगर वह आजकल एन.जी.ओ. पॉलिटिक्स में व्यस्त है, ग्रीन मूवमेंट पर बोलने के लिए उसे जोलीग्रांट एयरपोर्ट से वाया एयर लंदन जाना है, वहाँ एक समिट में उसे बोलना है।''[14]

इस संग्रह की कहानियों में जीवन की छोटी–छोटी स्मृतियाँ हैं, जो मनुष्य के अतीत का हिस्सा होते हुए भी वर्तमान को गहराई से प्रभावित करती हैं। इन लघुकथाओं में प्रेम की रोमानियत, पहाड़ की खूबसूरती, आकर्षण, युवाओं के संघर्ष, वर्तमान के सुलगते प्रश्न, राजनीति, अर्थनीति, वैश्विक युद्ध की तपिश, कोरोना की विभीषिका, कश्मीर के विस्थापित पंड़ितों का दर्द इत्यादि का कभी पूर्वदीप्ति शैली में, तो कभी अभिधात्मक लहजे में, तो कभी गहरे व्यंग्य का सस्पर्श लिए गहन एवं सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। कहानी की दुनिया में यह कहानी संग्रह अपने आकार की लघुता, सघन अनुभूतियों, मानवीय मूल्यों एवं वैश्विक स्तर पर घटित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक वर्चस्ववाद के कारण हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

सन्दर्भ

1. रूप देव गुणदेव, हिन्दी लघुकथा उलझते–सुलझते प्रश्न, पृ०सं० 14
2. सतीशराज पुष्करणा (सं०), लेख– हिन्दी लघुकथा की गौरवशाली परम्परा, हिन्दी लघुकथा सृजना एवं समीक्षा, पृ०सं० 14
3. राजा नरेन्द्र (सं०), बोलते हाशिये, पृ०सं० 16
4. रोशनलाल सुरीरवाला (सं०) व प्रभाकर वर्मा, हिन्दी लघुकथा : प्रकृति और पहचान, डॉ० भगवान सहाय पचौरी, लेख–लघु कथा : एक दृष्टि, पृ०सं० 69
5. विपिन शर्मा, तुम जिन्दगी का नमक हो, पृ०सं० 7
6. वही, भूमिका से उद्धृत
7. वही, पृ०सं० 8
8. वही, पृ०सं० 33
9. मधुदीप (सं०), पड़ाव और पड़ताल, डॉ० स्वर्ण किरण, लेख– कमल चोपड़ा और उनका लघुकथा संसार, पृ०सं० 16
10. वही, पृ०सं० 36
11. वही, पृ०सं० 58
12. वही, पृ०सं० 23
13. वही, पृ०सं० 13
14. वही, पृ०सं० 49